Aug-2021 ISSUE-II(II), VOLUME-X

Published Special issue
With ISSN 2394-8426 International Impact Factor 6.222
Peer Reviewed Journal

Published On Date 31.08.2021

Issue Online Available At :http://gurukuljournal.com/

Organized &
Published By

Chief Editor,
Gurukul International Multidisciplinary Research Journal
Mo. +919273759904 Email: chiefeditor@gurukuljournal.com
Website : http://gurukuljournal.com/

INDEX

Paper No.	Title	Author Name	Page No.
1	विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन	डॉ. रितेश मिश्रा & निलेश शुक्ला	3-11
2	उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् CBSE एवं CG बोर्ड के विद्यार्थियों में तनाव का अध्ययन	डॉ. मनीषा जैन & सावित्री केसरिया	12-18
3	Challenges In Human Resource Management: A Critical Study	Kapil Raut	19-24
4	उच्च माध्यमिक शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयक जाणीव जागृतीचा अभ्यास	प्रा.डॉ.मोतीलाल सुकदेव उभाळे	25-28

विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

*** डॉ. रितेश मिश्रा,** सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालानी, रायपुर (छ.ग.)
****निलेश शुक्ला,** एम.एड. (प्रशिक्षार्थी), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.)

सारांश

शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा का वातावरण, पारिवारिक आर्थिक स्तर, विद्यालयी समायोजन, सामाजिक धार्मिक स्थिति, रूचियां तथा आकांक्षा स्तर, आत्मविश्वास इत्यादि घटक प्रभावित करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि वर्तमान सामाजिक आर्थिक सन्दर्भ इत्यादि में सर्वोतम, विशिष्ट व महत्वपूर्ण कारक है। स्पष्ट रूप से शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी की सभी उपलब्धियों को प्रभावित करती है तथा स्वयं अन्य गतिविधियों व उपलब्धियों से प्रभावित होती है। शैक्षिक उपलब्धि, निष्पति परीक्षणों एवं विषयों की निष्पति के आधार पर निर्धारित की जाती है। बालकों को किसी न किसी उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर शिक्षा दी जाती है। और इन उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। इसी की जांच के लिए शैक्षिक निष्पति का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार पदार्थ का मापन संभव है उसी प्रकार शिक्षा की उपलब्धियों का मूल्यांकन भी संभव है। शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त किया गया कौशल एवं ज्ञान है जिसका मापन किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में आकड़ों के संकलन के लिए प्रमाणीकृत उपकरण जिससे विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण जानने के लिए **हरप्रीत भाटीया और एन. के. चड्डा** द्वारा निर्मित **पारिवारिक वातावरण मापनी** का प्रयोग किया है। सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात, सहसंबंध गुणांक सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा। परिणाम दर्शित करते हैं कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

1. भूमिका

परिवार का सकारात्मक वातावरण किशोरों में आत्मविश्वास भर देता है, उसके सोचने समझने की शक्ति, उसके वांछनीय व्यवहार का निर्धारण आदि सभी पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करते हैं घर के स्वच्छ, शान्तिमय एवं बौद्धिक वातावरण का सर्वाधिक प्रभाव किशोरों पर पड़ता है ग्रामीण हो या शहरी समुचित प्रेरणात्मक वातावरण किशोरों का सृजनात्मक चिन्तन एवं आत्मविश्वास बढ़ाता है साथ ही स्वस्थ वातावरण का प्रभाव उसकी विद्यालय में उपलब्धियों पर पड़ता है खासतौर पर शैक्षिक उपलब्धि पर।

बालक की शिक्षा में परिवार व पारिवारिक वातावरण का प्रभाव –

वातावरण या atmosphere को प्रायः जलवायु मान लिया जाता है। पर वातावरण एक सामाजिक तौर पर पारिवारिक माहोल है। इस परिवार, घर विशेष में जो संस्कार, धर्म, परंपरा, रीतिरिवाज, खानपान, आर्थिक सम्पन्नता, विपलता, शिक्षा अशिक्षा आदि–आदि विविधताओ से नैतिक' अनैतिक उचित अनुचित, मौलिक, भौतिक व आंतरिक स्वरूप का एक झांकी से है, जिसका प्रभाव परिवार के हर संस्था के साथ बालक पर भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्षत पड़ता है।

यद्यपि वर्तमान युग संयुक्त के जगह एकाकी परिवार ने ले लिया है तथा अब एकाकी परिवार में भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित हो गया है। यानि पहले दादा–दादी, माता–पिता, ताउ–ताई, चाचा–चाची व सभी के बच्चे एक संयुक्त परिवार में रहते थे। व्यक्तिगत सोचों की विविधताओं, स्वतंत्रता एवं शांतिपूर्ण विकास को मद्देनजर रख, 'एकल परिवार' – माता–पिता व उनसे उत्पन्न अविवाहित संतान रहने लगे। अब अत्याधुनिक संस्कृति में कुछ जगहों माता–पिता व उनसे उत्पन्न बच्चे तो रहते है पर 'लिव इन

रिलेशनशीप की पाश्चात्य परंपरा का अंधानुकरण भारत में भी प्रचलित होने लगा है, जिससे माता–पिता साथ होते हुए भी अलग या किसी दूसरे से रिलेशनशीप व (2) तलाक (3) वैचारिक मतभेद वमस्य तथा अन्य कारणों से माता–पिता केवल पालक बन बच्चो को संबंध विच्छेद की अवस्था में माता या पिता कोई एक पास रहा है शांतिपूर्ण विकास तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की माह में इसका इस संस्कृति का बच्चे के व्यक्तित्व उसके सर्वांगिण विकास पे क्या प्रभाव पड़ता है। यही अध्ययन का विषय है।

नवजात शिशु अपने जीवन की यात्रा को परिवार से ही आरंभ करता है। तथा इसी संस्था में रहते हुए उसे विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्राप्त होती है। जैसे–जैसे बालक की आयु में वृद्धि होते जाती है, वैसे–वैसे परिवार द्वारा उसमें उन सभी मानवीय गुणों का विकास होता है जिनकी आवश्यकता उसे आगे चलकर एक सुयोग्य एवं समरित्त नागरिक के रूप में पड़ती है। इस प्रकार जब तक बालक जीवित रहता है तब तक उस परिवार का प्रभाव पड़ता ही रहता है। सूत्र रूप में बालक को बनाने और बिगाड़ने का उत्तरदायित्व अब भी परिवार पर ही है।

परिवार में बालक की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। परिवार में ही रहते हुए उसे नाना प्रकार के संवेगात्मक अनुभव प्राप्त होते हैं। इन आवश्यकताओं तथा संवेगात्मक अनुभवों का बालक की शिक्षा से घनिष्ठ संबंध होता है। संतोषजनक अनुभवों की बालक को सीखने की प्रेरणा मिलती है। इससे उसका स्वभाविक विकास होता है। इसके विपरित कटु अनुभवों की उपस्थिति में बालक का विकास कुण्ठित होने लगता है।

प्रत्येक परिवार का व्यक्तित्व अलग–अलग होता है। प्रायः देखने में आता है कि विभिन्न परिवारों की रूचियाँ तथा बोलने–चालने के ढंग अलग–अलग होते हैं। इन सबसे बालक प्रभावित होता है। जब बालक किसी ऐसी बात के लिए हठ कर बैठता है जिसे परिवार के सदस्य उचित नहीं समझते तो बालक को यही कहकर समझाने का प्रयास किया जाता है कि ''हम लोग ऐसा नहीं करते''। इससे बालक में अपनेपन की भावना विकसित होती है तथा वह अपने आपको सुरक्षित समझता है। यही अपनापन तथा मनोवैज्ञानिक सुरक्षा बालक के विकास के लिए परमावश्यक है।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है। दूसरों शब्दों में विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाली उस कक्षा की क्रिया को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं, जो विद्यार्थी द्वारा पूरे सत्र के दौरान की जाती है।

फ्रीमेन के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण, वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठयक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है।''

शैक्षिक उपलब्धि वार्षिक परीक्षा के मूल्यांकन के प्राप्त अंको के आधार पर लगा लिया जाता था परन्तु वर्तमान समय में बालक के शैक्षिक उपलब्धि उसके साल भार के इकाई टेस्ट, (फॉरमेटिव व सम्मिरीव) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति से पाठ्यक्रम के विषयवस्तु को विभाजित कर उनके मूल्यांकन तथा अनेक प्रोजेक्ट वर्क, दत्त कार्यो, रचनात्मकता, रूचि, अभिरूचि लिखित मौखिक (वायवा) NSS, NCC, खेल, आदि के समग्र प्राप्तांकों के योगफल व अंकाबंटन के आधार पर निकाला जाता है, व अंत में वार्षिक परीक्षा के सभी के समग्र परिणाम दिया जाता है।

2. अध्ययन का महत्व

प्रत्येक शिक्षार्थी को शिक्षा अर्जन के लिए मोमबत्ती के समान पिघलना होता है जिस प्रकार कोई आकार गृहण करने से पूर्व लोहे को आग में तपना होता है। उसी प्रकार शिक्षार्थी भी विभिन्न वातावरणों का सामना करते हुए अपने को साबित करते हुए लक्ष्य तक पहुँचता हैं। शिक्षार्थी अध्ययन की अच्छी व उच्च आदतों का विकास परिवार से ही शुरू करता है।

उच्च एवं सकारात्मक सोच परिवार से ही सर्वप्रथम मिलती है। गृह वातावरण बालक के प्रारम्भिक जीवन की शिक्षा का केन्द्र का आधार बनता हैं जिसमें बालक अपने अभिभावक परिवार के अन्य सदस्यों के समूह में अपना व्यवहार निर्धारित करता है।

पारिवारिक वातावरण स्वस्थ होने पर बालक का सर्वांगीण विकास उचित ढंग से हो पाता है। अक्सर यह देखा जाता है कि अधिकांश परिवारों का वातावरण स्वस्थ नहीं होता, माता–पिता छोटी–छोटी सी बातों को लेकर झगड़ने लगते है, परिवारों का रहन–सहन, उनकी आदतें, बोलचाल का तरीका, विचार, अनुशासन, अभिवृत्ति, आकाक्षांए आदि काफी हद तक प्रभावित करती है। बालक अलग–अलग पारिवारिक परिवेशों से विद्यालय में पढ़ने आते है। प्रायः यह माना जाता है कि ग्रामीण परिवारिक वातावरण में पले बढ़े विद्यार्थी, शहरी पारिवारिक वातावरण में पले पढ़े विद्यार्थियों की अपेक्षा कम सृजनात्मक एवं आत्मविश्वासी होते हैं, इसी प्रकार यह भी मान लिया जाता है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का परिवारिक वातावरण निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण से भिन्न होने के कारण उनकी सृजनात्मकता, आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। इसी कारण आज प्रत्येक अभिभावक अपने बालक को निजी विद्यालय में भेजना चाहते हैं और शहरी विद्यालयों में भी ग्रामीण विद्यार्थी प्रवेश लेते है वे शहर में रहकर पढ़ाई करना चाहते है।

अतः यह अध्ययन करने का विचार किया कि क्या विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन एवं आत्मविश्वास व शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है, यदि नहीं तो ऐसे कारणों को जानना कि यदि वास्तव में जो विचारधारा बन रही है उनमें सच्चाई नहीं है, यदि हां तो किस प्रकार का पारिवारिक वातावरण किशोर विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन, आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है और कितना ? क्या सृजनात्मक चिंतन एवं आत्मविश्वास एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं? विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, सृजनात्मक चिंतन एवं आत्मविश्वास पर उनके पारिवारिक वातावरण का कितना प्रभाव पड़ता है।

3. संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

राना, बिपाशा एवं चौधरी, गरिमा. (2017) ने किशोरों के बीच नैतिक तर्क का विकास उनके परिवार के वातावरण के कारकों विशेषाधिकारों के अभाव एवं पौष्टिकता के सम्बन्ध में किया तथा निष्कर्ष में पाया कि माता–पिता का रवैया बच्चों के नैतिक विकास को विशेष रूप से प्रभावित करता है, विशेष रूप से नैतिक विकास को। विशेषाधिकारों और पौष्टिकताओं की कमी बच्चों के नैतिक तर्क को प्रभावित नहीं करती हैं। बच्चों में नैतिक तर्क का विकास किसी एक कारक से प्रभावित नहीं होता, बल्कि यह कई कारको से प्रभावित होता है। बच्चों में नैतिक तर्क का विकास एक बहुत ही जटिल घटना है जो कई मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत कारकों पर निर्भर करता है जो मानव व्यक्तित्व का गठन करते हैं।

स्टीफन, कुमार विवेक एवं सिहं , प्रेमप्रभा (2017) ने, पुनर्बलन के संदर्भ में सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन किया। एकत्रित आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि इलाहाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पुर्नबलन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

कुमार, विनोद ए. एवं अनु, एस. आर. (2016), ने 21 वीं सदी में स्कूल शिक्षा में सुधार लाने में पारिवारिक जीवन की शिक्षा की भूमिका शीर्षक पर शोध अध्ययन किया और पाया कि पारिवारिक जीवन की शिक्षा की सफलता मुख्य रूप से शिक्षकों की कुशलता और गतिशीलता पर निर्भर करती है, कक्षा के निर्देशों के दौरान और साथ ही सह पाठ्यक्रम गतिविधियों के संगठन के माध्यम से शिक्षक द्वारा परिवार के जीवन की आवश्यकताएं शिक्षकों द्वारा भेजी जानी चाहिए।

कुमार, अक्षय (2016) ने, किशोरों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण, अकादमिक अभिप्रेरणा और समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया इन्होनें अपने अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त किये – (i). किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि में पारिवारिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। (ii) किशोरों को दी गई शैक्षिक प्रेरणा उनकी अकादमिक उपलब्धि को बढ़ाने में बहुत मदद करती है। (iii) शैक्षिक समायोजन किशोरों की शैक्षिक उपलब्धियों से निकटता से सम्बन्धित है। (iv) पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक प्रेरणा तथा समायोजन सभी किशोर शिक्षार्थियों के अकादमिक अभिप्रेरणा में योगदान देते हैं। (v) शहरी और एकल परिवारों का पारिवारिक वातावरण ग्रामीण और संयुक्त परिवारों की तुलना में बेहतर है। (vi) शहरी इलाके में रहने वाले किशोर अकादमिक रूप से अधिक अभिप्रेरित होते हैं। शहरी किशोरों की अपेक्षा शहरी किशोरियां अकादमिक रूप से अधिक अभिप्रेरित होती है। (vii) शहरी किशोर, किशोरी सामान्य रूप से अधिक समायोजित होते हैं तथा किशोरों बजाय, किशोरियाँ अधिक समायोजित होती है। (viii) किशोरों की तुलना में किशोरियों की अकादमिक अभिप्रेरणा उच्च होती है तथा एकल एवं शहरी परिवारों के किशोर किशोरियों की अकादमिक अभिप्रेरणा अच्छी होती है।

जैन, रितेश (2015) ने, अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्यययन किया तथा निष्कर्ष के रूप में यह प्राप्त किया कि अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक संरचना या नियंत्रण, अनुपालन या विलगन, दण्ड या पुरस्कार, विशेषाधिकार या पालन पोषण, अनुमति या नामंजूरी का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. समस्या का कथन

''विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन'' रायपुर जिले के संदर्भ में

5. प्रकार्यात्मक परिभाषा

पारिवारिक वातावरण :– क्लेयर (1966) के अनुसार, ''पारिवारिक वातावरण से हम संबंधों की वह व्यवस्था समझते हैं, जो माता–पिता और उसमें संतानों के बीच पायी जाती है।''

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य, पारिवारिक नियंत्रण, संरक्षण, दण्ड, अनुपालन, सामाजिक बहिष्कार, पुरस्कार, विशेषधिकारों का अभाव, परिपोषण, तिरस्कार, अनुमति सुचकता से है।

शैक्षिक उपलब्धि :– गुड्स डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन के अनुसार, ''शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ विद्यालयी विषयों में प्राप्त ज्ञान एवं विकसित कौशल है, जो किसी परीक्षण से या अध्यापक प्रदत्त प्राप्तांकों से मापा जाता है।''

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों की पिछली कक्षा की माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों से है।

6. अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके पारिवारिक वातावरण के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना।

7. अध्ययन की परिकल्पना

(अ) विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

(ब) ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

(स) शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

8. अध्ययन की परिसीमा

समय व साधनों की सीमितता के कारण शोध अध्ययन की परिसीमाएँ निर्धारित की गई हैं, जो निम्नांकित हैं –

(अ) प्रस्तुत अध्ययन में केवल रायपुर जिले के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

(ब) प्रस्तुत अध्ययन में 2 ग्रामीण एवं 2 शहरी विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

(स) प्रस्तुत अध्ययन में 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

(द) प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 9वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

9. शोध प्रविधि

इस विधि का कार्य उनके प्रदत्तों को समग्र सारणीबद्ध करने के अतिरिक्त व्याख्या, तुलना, मापन, वर्गीकरण, मूल्यांकन सामान्यीकरण करना भी है। वर्तमान अध्ययन में विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि का विवरण संकलित तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है, इस कारण वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि सर्वथा उपयुक्त है।

10. जनसंख्या

अनुसंधान में जनसंख्या का अर्थ इकाईयों के समूह से होता है। प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान हेतु रायपुर जिले के अंतर्गत आने वाले कक्षा 9 वीं के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या के तौर पर चुना गया है।

11. न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि से विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

तालिका क्रमांक 3.1

अध्ययन हेतु चयनित शहरी विद्यालय एवं विद्यार्थियों की संख्या

क्रं.	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रां	कुल विद्यार्थी
1.	सेन्ट थॉमस इंग्लिश मिडियम स्कूल, डी. डी. उपाध्याय नगर, डंगनिया, रायपुर (छ.ग.)	15	15	30
2.	सावित्री बाई फुले एज्युकेशन अकॅडमी, डंगनिया, रायपुर (छ.ग.)	15	15	30
कुल		30	30	60

तालिका क्रमांक 3.2

अध्ययन हेतु चयनित ग्रामीण विद्यालय एवं विद्यार्थियों की संख्या

क्रं.	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रां	कुल विद्यार्थी
1.	सरस्वती शिशु मंदिर, धरसीवां, रायपुर (छ.ग.)	15	15	30
2.	कृष्णा पब्लिक स्कूल, देवपुरी रोड, माना, रायपुर (छ.ग.)	15	15	30
कुल		30	30	60

12. चर

(क) स्वतंत्र चर – पारिवारिक वातावरण

(ख) आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

13. उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आकड़ों के संकलन के लिए प्रमाणीकृत उपकरण जिससे विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण जानने के लिए **हरप्रीत भाटीया और एन. के. चड्डा** द्वारा निर्मित **पारिवारिक वातावरण मापनी** का प्रयोग किया है।

14. सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध कार्य में मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात, सहसंबंध गुणांक सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया है।

15 परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

(अ) विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

सारणी क्रमांक – 4.1

विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों की संख्या एवं सहसंबंध गुणांक सारणी

कार्ल पियर्सन सहसम्बन्ध	N	सहसम्बन्ध गुणांक ('r')मान	निष्कर्ष
पारिवारिक वातावरण	120	1.00	धनात्मक सहसम्बन्ध तथा 0ण्05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	120		

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका संख्या – 4.1. में विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त 'r' का मान 1.00 है, यह प्राप्त मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–1 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त 'r' का मान इंगित करता है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

(ब) ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

तालिका संख्या – 4.02

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों की संख्या एवं सहसंबंध गुणांक सारणी

कार्ल पियर्सन सहसम्बन्ध	N	सहसम्बन्ध गुणांक ('r')मान	निष्कर्ष
पारिवारिक वातावरण	60	.993	धनात्मक सहसम्बन्ध तथा 0ण्05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	60		

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका संख्या – 4.2. में एकल विद्यालयों के 60 विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त 'r' का मान .993 है, यह प्राप्त मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :–

ISSN No. 2394-8426
Aug-2021
Issue–II(II), Volume–X

प्रतिपादित परिकल्पना–2 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त 'r' का मान इंगित करता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

(स) शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

तालिका संख्या – 4.03

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों की संख्या एवं सहसंबंध गुणांक सारणी

कार्ल पियर्सन सहसम्बन्ध	**N**	सहसम्बन्ध गुणांक ('r')मान	निष्कर्ष
पारिवारिक वातावरण	60	.979	धनात्मक सहसम्बन्ध तथा 0॰05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
शैक्षिक उपलब्धि	60		

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका संख्या – 4.3. में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त 'r' का मान .979 है, यह प्राप्त मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–3 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त 'r' का मान इंगित करता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

16. निष्कर्ष

परिकल्पना के आधार पर निष्कर्ष :–

परिकल्पना क्रमांक 1

विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–1 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त 'r' का मान इंगित करता है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

परिकल्पना क्रमांक 2

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–2 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त 'r' का मान इंगित करता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक

सहसम्बन्ध है, अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

परिकल्पना क्रमांक 3

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

परिणाम की व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–3 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त 'r' का मान इंगित करता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

17. सुझाव

विद्यार्थियों के लिए सुझाव :–

1. विद्यार्थियों को अपने निर्धारित पाठ्यक्रम का संपूर्ण अध्ययन करना चाहिए।
2. शिक्षक द्वारा दिये गये निर्देशों का उचित परिपालन करना चाहिए।

पालक (अभिभावक) के लिए सुझाव :–

1. शिक्षा के महत्व की अनुभूति कराने तथा अभिभावकों को अभिप्रेरित करने हेतु अध्यापक अभिभावक संपर्क को अधिकाधिक बढ़ाने और विद्यालय में समुदाय की रूचि बढ़ाने हेतु योजनाबद्ध कार्यक्रम में अभिभावकों की अधिकाधिक सहभागिता हो।
2. विद्यालयों के समारोहों तथा वार्षिक खेलकूद एवं सांस्कृतिक परिवेश में विभिन्न कार्यक्रम में अभिभावक की सहभागिता हो, जहां वे अपने बच्चों को अभिप्रेरित कर सके।

शिक्षकों के लिए सुझाव निम्नलिखित हैं :–

1. बालक–बालिकाओं के लिए अलग से उनके प्रकृति के अनुरूप विभिन्न पाठ्यक्रम रखें और उन्हें दिलचस्प बनाने का प्रयास करें।
2. शिक्षक विद्यार्थियों में उचित शैक्षिक विकास करके उनमें उत्तम विचारों, आदर्शों और गुणों का निर्माण कर सके।

18. अनुकरणीय अध्ययन

1. प्रस्तुत शोध कार्य सभी वर्ग के विद्यार्थियों पर किया गया है। भावी शोधकार्य सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य समुदाय के सन्दर्भ मे भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल छ.ग. बोर्ड, रायपुर से सम्बद्ध विद्यार्थियों को ही प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया है। भावी शोधकार्य भारत में स्थित समस्त शिक्षा परिषदों के सन्दर्भ में भी शोध कार्य कर सकते हैं।

सन्दर्भ साहित्य सूची

1. गुप्ता, मनीषाकुमारी. (2012). ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण तथा आत्मविश्वास का अध्ययन अप्रकाशित शोध, जयपुर नेशनल युनिर्वसिटी, जयपुर.
2. कुल्हरी, रेखा. (2012). माध्यमिक स्तर के दलित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएँ, पारिवारिक वातावरण एवं आकांक्षा स्तर का अध्ययन पीएच.डी. (शिक्षा), उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, मानित विश्वविद्यालय, चुरू. URL: http://hdl.handle.net /10603/72964.

3. कैम्पवाल, ए. (2011). अस्थमा ग्रस्त 8 से 12 वर्ष के बच्चों में पारिवारिक वातावरण कारक एवं स्व प्रबन्ध अभ्यास से सम्बन्ध का अध्ययन. पीएच. डी. ओहियो विश्वविद्यालय. URL : ttp://hdl. Handle.net/10755/173843.
4. मुछाल, महेश कुमार. एवं कुमार, सुभाष. (2008). उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव. परिपेक्ष्य, वर्ष–15, अंक 3, दिसम्बर 2008, पृ.सं. 89–100.

उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् CBSE एवं CG बोर्ड के विद्यार्थियों में तनाव का अध्ययन

***डॉ. मनीषा जैन,** सहा. प्राध्यापिका, प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.)
****सावित्री केसरिया,** एम.एड. (प्रशिक्षार्थी) प्रगति महाविद्यालय

सारांश

वर्तमान समय में प्रत्येक छात्र प्रतियोगिता की दौड़ में शामिल है चाहे वो ग्रामीण क्षेत्र का हो या शहरी क्षेत्र का हो। प्रत्येक छात्र की चाह यही रहती है कि वो किसी भी तरह से अव्वल बना रहे। कुछ विद्यालयों में छात्रों के प्रोत्साहन स्तर को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न तरीके अपनाये जाते है जैसे पुरस्कार प्रदान करना, अच्छी ग्रेड देना या दूसरों व्यक्तियों के सामने उसके कार्य की प्रशंसा करना आदि। प्रस्तुत शोध में अध्ययनरत् सी.जी बोड़ एवं सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों का तनाव प्रबंधन का अध्ययन करना है, क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में सर्वेक्षण विधि ही उपयोगी होने से इसी का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध न्यादर्श के रूप में रायपुर जिले के शासकीय और अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को यादृच्छिक चयन द्वारा चुना गया जो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों 60 छात्र व 60 छात्राएं के तनाव स्तर को न्यादर्श के ऊपर चुना गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का तनाव ज्ञात करने के SSRC Dr. Zakia Akhtar द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु माध्य, मानक विचलन (Standard Deviation), क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio), t-Test सांख्यिकीय प्रविधियां प्रयोग में लायी गई है। सीबीएसई और सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों में होने वाले तनावों में सार्थक अंतर पाया गया। शासकीय व अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनावों में सार्थक अंतर पाया गया।

1. भूमिका

आमतौर पर समझा जाता है कि बड़े व्यक्ति ही तनावग्रस्त रहते है लेकिन आज हालात बदल गए है। जब विद्यार्थियों के सम्मुख आ खड़ी है अभिभावकों की अपेक्षाए, जिन्हें सामाजिक अपेक्षा भी कहा जा सकता है। माता–पिता की महत्वकांक्षाओं की खातिर बच्चों का बचपन कहीं खो गया है। जिस उम्र में उन्हें बेफिक्र होना चाहिए, वे तनाव ग्रस्त रहने लगें है। जो बच्चे इस कच्ची उम्र में तनावग्रस्त रहते है वे हर समय डरे एवं सहमें हुए है। उनका सामाजिक दायरा सिमट जाता है। वे अपने में सीमित होकर रह जाते है यहां तक कि अपने हम उम्र के बच्चों के साथ हस बोल भी नहीं पाते। जिसके फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व का विकास एवं स्वतन्त्र चिन्तनशील, संवेदनशील न होकर कुण्ठित, निराशावादी, अपराधी प्रवृति तथा तनावग्रस्त असामान्य होता है और यही से वह शिक्षा के लक्ष्य से कोसों दूर हो जाते है।

इस सदी के अभिभावकों पर दृष्टिपात करते है तो पाया जाता है कि प्रत्येक अभिभावक को कई प्रकार के तनाव है जैसे पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक आदि।

परन्तु उनमें से भी प्रमुख रूप से जो तनाव देखे गये है वे दो प्रकार के हैं–

1. आजीविका के साधन सम्बन्धी
2. बालकों के परीक्षा में प्राप्तांक तथा कैरियर सम्बन्धी

वास्तव में शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपनी परिस्थिति तथा वातावरण के मध्य अनुकूलन करना सिखता है। परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है जो एक निंरतर चलने वाली प्रक्रिया है। जो विद्यार्थी अपने वातावरण से जितना अधिक सामंजस्य स्थापित कर पाता है उसके सफलता के आसार उतने ही अधिक बढ़ जाते है एवं जो

विद्यार्थी अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता उसके पथभ्रष्ट होने के आसार बढ़ जाते है। अतः शिक्षा का स्वरुप इस प्रकार होना चाहिए कि व्यक्ति अपने वातावरण में अपने आप को समायोजित कर सके।

वर्तमान में छात्रों में बढ़ते तनाव स्तर एवं घटती समायोजन क्षमता को उनके प्रोत्साहन स्तर को बढावा देने के लिए शोधार्थी द्वारा इस विषय का चयन किया गया।

विद्यार्थियों में अनेक प्रकार के तनावों को देखा जा सकता है जैसे कि परीक्षा की चिन्ता, कुण्ठा, समझने में परेशानी होने पर चिन्ता, अध्यापकों से भय, निराशा अपरिचित से बात करने में घबराहट, एकांकी प्रवृत्ति, आत्मविवास की कमी अपर्याप्त साधन सुविधाओं की चिन्ता इत्यादि। कुछ विद्यार्थी इनके धनात्मक प्रभाव के फलस्वरूप भविष्य में समाज में अपना उच्च स्तर बनाने में सफल भी होते है। जबकि कुछ विद्यार्थी इन तनावों के ऋणात्मक प्रभाव के कारण हीनता की भावना से ग्रसित हो जाते हैं और अपने जीवन में उन्नति नहीं कर पाते हैं।

अक्सर देखा गया है कि छात्र एग्जाम के प्रेशर में या पढ़ाई के बढ़ते दबाव के कारण डिप्रेशन में आ जाते है, आज कल बढ़ते हुए प्रतियोगिता की होड़ में छात्रों पर दबाव पढ़ता ही जा रहा है, अर्थात् वह अपने अपेक्षा के विपरीत खुद को देखते ही असमर्थ महसूस करने लगते हैं। छात्रों की नियमित गतिविधियों में होने वाली कई बदलावों का पता लगाकर तनाव को पहचाना जा सकता है।

तनाव वस्तुतः व्यवहार परिवर्तन के फलस्वरूव उत्पन्न प्रतिक्रिया है जो मनुष्य को उसकी मूल प्रवृत्तियों से भिन्न बना देता है। यह शारीरिक एवं भावात्मक स्थितियों के परिणाम स्वरूप पैदा होता है जिसे हम डरावना, भ्रम में डालने वाला, रोमांचक या थकाने वाला मानते हैं।

इलियट के शब्दों में –

तनाव से हमारा तात्पर्य किसी संघर्षात्मक परिस्थितियों से है जो विरोधी या विपरीत मनोवृत्तियों को जन्म देता है।

अतः स्पष्ट है कि तनाव विद्यार्थी की सामान्य मनोदशा है क्योंकि उपर्युक्त लक्ष्य प्राप्ति में मनुष्य अपने को सक्षम नहीं जान पाता और अपनी असफलता का ज्ञान उसे तनाव की ओर घकेल देता है।

तनाव व संघर्ष उस समय उत्पन्न होता है जब व्यक्ति को पर्यावरण की शक्तियों का सामना करना पड़ता हे जो उसके स्वयं की रूचि व इच्छा के विपरीत कार्य होती है।

– क्रो व क्रो के अनुसार

2. अध्ययन का महत्व

वर्तमान संदर्भ मे देखा जाये तो हर तरफ प्रतिस्पर्धा का दौर चल रहा है प्रत्येक मनुष्य इस होड़ में लगा कि वह अपना जीवन कैसे दूसरे समकक्ष कर ले। इसी कशमकश में आज का प्रत्येक अभिभावक लगा रहता है अपने संतान से यह उम्मीद बांध लेते है कि हमारी संतान योग्य व काबिल बन सके हर कक्षा के परिणाम उनका पुत्र व पुत्री के ही अंक सर्वश्रेष्ठ रहे। इसी वजह विद्यालयी छात्र–छात्राएं किशोरावस्था में तनाव उत्पन्न होता है। चूंकि किशोरावस्था भावात्मक एवं संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था है। वह इस परिवर्तन के कारण उत्पन्न समस्या को स्वयं अवगत नहीं रहता है। कई सारी बाते उसके स्वयं बस में नही होती है पर नियंत्रित नही कर पाता है, जो मनोवैज्ञानिक रूप से गड़बडा जाती है और तनाव पैदा हो जाता है।

किशोरावस्था में बालक अपने व्यक्तित्व से स्वयं परिचित नहीं रहता है उसके मनोमस्तिष्क में संघर्षात्मक भाव प्रकट होते रहते है जो सहज रूप से शारीरिक मानसिक परिवर्तन के फलस्वरूप प्रगट होते है जिसके कारण सामान्य भाव एवं अभिव्यक्ति उसे क्रोधित कर देता है। जब विद्यार्थी अपने विद्यालीय वातावरण में समान्य शैक्षिक समायोजन में अपने को असमर्थ समझने लगता है उनके अंदर बहुत सारे भाव

और आवश्यकताएं जो उससे समाज व उसके सगे संबंधी जो उम्मीद लगा बैठता है। जैसे कि उदा. आप अब बड़े हो गये बच्चे नही रह गये। आपसे इस तरह कार्यो में गलतियां नहीं होनी चाहिए इत्यादि–इत्यादि।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए लघु शोध प्रबंध हेतु ''शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् CBSE एवं CG के विद्यार्थियों में तनाव का अध्ययन'' कर उनको इस परेशानी के कारणों का ज्ञान कर उनका निदान करने का प्रयास किया गया है।

3. संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

1. **मीणा, मैना (2012)** ने ''उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंताओं का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव'' पर शोधकार्य किया। निष्कर्ष रूप पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में पारिवारिक, विद्यालय, आर्थिक एवं अन्य कारक सम्बन्धी शैक्षिक दुश्चिंताओं का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करने पर सम्बन्धी क्षेत्रों के प्रति सकारात्मकता पाई गई।
2. **जिला मिरोट (2012)** ने ''लड़कों एवं लड़कियों में आकस्मिक व्यवहारगत परिवर्तन एवं दुश्चिंता : दो विपरित दो सामूहिक न्यादर्शों का अध्ययन'' किया। शोधकर्ता द्वारा किये अध्ययन में यह पाया गया कि छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा अधिक विरोधी व्यवहार होता है तथा दोनों समूहों पर दुश्चिंता व विरोधी व्यवहार का संबंध एक समान रहा। शोध से यह पाया गया कि बचपन में छात्र–छात्राओं में विरोधी व्यवहार व दुश्चिंता स्वाभाविक रूप में पायी जाती है।
3. **गुप्ता एट. अल. (2011)** ने शैक्षणिक तनाव और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर की जांच की। परिणाम यह ज्ञात होता है कि लड़के तथा लड़कियों दोनों में समान रूप से उनके शैक्षिक स्थिति में अनुभवी मानसिक मनाव पाया गया था।
4. **उपाध्याय और सिंह (2008)** ने पाया कि पहले वर्ष के छात्रों ने दूसरे वर्ष के छात्रों की तुलना में शैक्षणिक तनाव के उच्च स्तर का अनुभव किया। और एक ही समय में महिला छात्रों में अपने पुरूष समकक्ष की तुलना में अधिक शैक्षणिक तनाव को माना।
5. **स्टूयर्स एट. अल. (2000)** ने कहा कि जो छात्र समस्या केन्द्रित में लगे हुए थे, वे प्रेरित होने और उन विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करने की संभावना रखते थे, जो भावना केन्द्रित में संलग्न थे।

4. समस्या का कथन

उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् CBSE एवं CG बोर्ड के विद्यार्थियों में तनाव का अध्ययन।

5. प्रकार्यात्मक परिभाषा

CBSE :– सीबीएसई का पूरा नाम सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकेन्ण्डरी एजुकेशन है, इसे हिन्दी में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कहते हैं, यह बोर्ड भारत सरकार का एक शैक्षिक बोर्ड है, जो केन्द्र सरकार के अधीर है।

CG Board :– सीजी बोर्ड का पूरा नाम छत्तीसगढ़ बोर्ड ऑफ सेकेन्ण्डरी एजुकेशन है, इसे हिन्दी में छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल कहते हैं। यह छत्तीसगढ़ राज्य शासन का शैक्षिक बोर्ड है।

तनाव :–

''तनाव वह मानसिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति आगत आपत्ति के कारण असुविधा अनुभव करता है।''

– **हरलॉक**

6. अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को लिया गया है:–

1. सीबीएसई और सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों में होने वाले तनाव का अध्ययन करना।
2. शासकीय व अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनाव का अध्ययन करना।

7 अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई है जो कि इस प्रकार से है:–

1. सीबीएसई और सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों में होने वाले तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
2. शासकीय व अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

8. अध्ययन की परिसीमा

अध्ययन की परिसीमा से तात्पर्य समस्या के व्यापक रूप को एक सीमा में बांधना है क्योंकि व्यापक क्षेत्र में अध्ययन कठिन व अधिक खर्चीला होगा। प्रस्तुत समस्या के लिये परिसीमांकन निम्न प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन मे रायपुर जिले के सीबीएसई एवं सीजी बोर्ड के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन के लिये उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।
5. चयनित विद्यार्थियों में 60 सीबीएसई एवं 60 सीजी बोर्ड के शासकीय व आशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
6. प्रस्तुत अध्ययन में कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
7. प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों में होने वाले तनाव तक ही सीमित किया गया है।

9. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में अध्ययनरत् सी.जी बोड़ एवं सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों का तनाव प्रबंधन का अध्ययन करना है, क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में सर्वेक्षण विधि ही उपयोगी होने से इसी का चयन किया गया है।

10. जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सीबीएसई और सीजी बोर्ड में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या के तौर पर लिया गया है।

11. न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। क्योंकि यादृच्छिक शोध विधि के माध्यम प्रशासन में सुविद्या और आंकड़ों के एकरूपता से बचा जा सकता है। प्राप्त परिणामों में अंतर स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध न्यादर्श के रूप में रायपुर जिले के शासकीय और अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को यादृच्छिक चयन द्वारा चुना गया जो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों 60 छात्र व 60 छात्राएं के तनाव स्तर को न्यादर्श के ऊपर चुना गया है।

12. चर

1. स्वतंत्र चर :– तनाव का अध्ययन
2. आश्रित चर – सीबीएसई एवं सीजी बोर्ड के विद्यार्थी

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

13. उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का तनाव ज्ञात करने के SSRC Dr. Zakia Akhtar द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। प्रयुक्त उपकरण की सहायता से शोधकर्ता आंकड़ों का संकलन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय और अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं में उत्पन्न तनाव के कारकों को जानने का प्रयास किया।

इस प्रमापीकृत उपकरण प्रश्नों की संख्या 51 है। जिसमें सकारात्मक व नकारात्मक प्रश्न में विभाजित प्रश्न है, जिसमें प्राप्तांकों का उसी आधार बढते व घटते क्रम निर्धारित किया गया।

14. सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध हेतु निर्मित की गई परिकल्पनाओं की पुष्टि करना अनुसंधान का मूल उद्देश्य है जिसके लिए प्रदत्तों की व्याख्या विश्लेषण के आधार पर सांख्यिकीय का उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्न लिखित सांख्यिकीय प्रविधियां प्रयोग में लायी गई है :–

1. केंद्रीय प्रवृत्ति माप – माध्य (Mean)
2. प्रमाप विचलन – मानक विचलन (Standard Deviation)
3. सार्थक अंतर के लिए – क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio)
4. t-Test

15. परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना कमांक 1

सीबीएसई और सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों में होने वाले तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 4.1

सीबीएसई और सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों में होने वाले तनावों की संख्या, माध्य, प्रमाप विचलन क्रांतिक अनुपात मूल्य एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

क्रं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	C.R.	सार्थकता
1.	सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थी	60	146.56	17.65	1.27	सार्थक अंतर नहीं
2.	सीजी बोर्ड के विद्यार्थी	60	150.01	20.70		

df = 118 (P>.05)

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सीबीएसई में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के तनाव का माध्य 146.56 व प्रमाप विचलन 17.65 एवं सीजी बोर्ड में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के तनाव का माध्य 150.01 है और प्रामप विचलन 20.70 है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों के तनाव का माध्य सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम है। अतः माध्यों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए CR कांतिक अनुपात निकाला गया जिसका मूल्य 1.27 है।

t परीक्षण सारणी के 118 df पर .01 स्तर पर टेबल मूल्य 2.62 है और .05 स्तर पर टेबल मूल्य 1. 98 है। अतः गणना मूल्य सारणी मूल्य से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक – H_1 ''सीबीएसई और सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों में होने वाले तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।'' परिकल्पना पुष्टि हुई।

परिकल्पना कमांक 2

शासकीय व अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 4.2

शासकीय व अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनावों की संख्या, माध्य, प्रमाप विचलन t मूल्य एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

क्रं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थक / सार्थक नहीं
1.	शासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थी	30	147.7	19.59	.87	सार्थक अंतर नहीं
2.	अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थी	30	152.34	20.66		

df = 58 (P>.05)

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के आधार पर शासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों के तनाव का माध्य 147.7 और प्रमाप विचलन 19.59 है तथा अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के के विद्यार्थियों के तनाव का माध्य 152.34 और प्रमाप विचलन 20.66 है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनाव का माध्य अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है अतः माध्यों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने लिए t परीक्षण किया गया जिसका मूल्य .82 है।

t परीक्षण सारणी 58 df पर .01 स्तर पर टेबल मूल्य 2.68 व .05 स्तर पर 2.01 है। गणना मूल्य सारणी मूल्य से कम है। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना क्रमांक – H_2 ''शासकीय व अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।'' परिकल्पना की पुष्टि हुई।

16. निष्कर्ष

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष निम्न है :–

परिकल्पना क्रमांक – H_1 ''सीबीएसई और सीजी बोर्ड के विद्यार्थियों में होने वाले तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।'' परिकल्पना पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – H_2 ''शासकीय व अशासकीय सीबीएसई बोर्ड के विद्यार्थियों में तनावों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।'' परिकल्पना की पुष्टि हुई।

17. सुझाव

प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार दिए जा सकते हैं –

यह शोधकार्य शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है। इस शोधकार्य से प्राप्त निष्कर्ष से शिक्षक अपने बालकों के प्रोत्साहन स्तर में वृद्धि कर उनकी समायोजन क्षमता को बढाते हुए उनकों उसी के अनुरूप उनको मार्गदर्शन प्रदान कर सकेगें।

यह शोधकार्य अभिभावकों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि अध्यापकों के लिए इससे प्राप्त निष्कर्षो से अध्ययन कर अभिभावक अपने बालको के प्रोत्साहन स्तर को बढ़ाते हुए परीक्षा संबंधी तनाव को कम करते हुए उनकी शैक्षिक उपलब्धि में आशातीत वृद्धि करने में सक्षम हो पायेगे।

यह शोधकार्य प्रधानाध्यापक के लिए भी महत्वपूर्ण है इस शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षो एवं सुझावों का प्रयोग कर प्रधानाध्यापक अपने विद्यालयी वातावरण में अपने अधीनस्थ शिक्षकों का प्रोत्साहन बढाते हुए विद्यालयी वातावरण को अधिक अच्छा बनाकर अपने विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय बना सकता है।

यह शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस लघु प्रयास से प्राप्त निष्कर्षो के अध्ययन से विद्यार्थी अपने तनाव को कम करते हुए समायोजन क्षमता में वृद्धि करके अपने लक्ष्य को शीघ्रता से प्राप्त कर सकता है।

18. अनुकरणीय अध्ययन

1. प्रस्तुत शोधकार्य को शोधार्थी ने रायपुर जिले तक ही सीमित किया है इसी अनुसंधान कार्य को अन्य जिलों को लेकर भी किया जा सकता है।
2. उक्त शोध कार्य में समय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है इसी कार्य को माध्यमिक या कॉलेज स्तर पर भी किया जा सकता है।
3. यह शोध कार्य केवल तनाव स्तर को लेकर किया गया। यही शोध कार्य अन्य चर जैसे शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य आदि को लेकर भी किया जा सकता है।
4. इस शोध कार्य को शोधार्थी द्वारा समय की कमी के कारण बहुत कम न्यादर्श पर किया गया इसी शोध कार्य को व्यापक स्तर पर किया जा सकता है।
5. यह शोधकार्य केवल जिले स्तर पर किया गया है इसी शोध कार्य को राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ– सूची

1. अख्तर, जॉकि (2011), स्टूडेन्ट स्ट्रेस स्केल, नेशनल साइक्लोजिकल कार्पोरेशन, आगरा, भार्गव बुक हाउस
2. अस्थाना विपिन व अन्य (2013), *"शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'*, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा पृ. स. – 90–104
3. बी. विवेक एवं अन्य (2013) *"भारत में शहरी क्षेत्र के व्यावसायिक कॉलेजो के छात्रो के बीच तनाव का अध्ययन''* ऑनलाईन प्रकाशित 13(3), पृ.स. 429–439
4. देव नाथ शिव एवं अन्य (2017) *''एकेडमी स्ट्रेस प्रेसर एन्जाइटी एंड मेन्टल हेल्थ अमंग इंडियन हाई स्कूल स्टूडेन्ट''*, पृष्ठ संख्या 26
5. कुमार के. सतीश एवं अन्य (2017) मणिपुर इम्फाल के हायर सेकण्डरी विद्यार्थियों में अवसाद, चिन्ता तनाव का अध्ययन, इंडियन कम्युनिट एम. एड-> 4.42 (2) > PMC 5427861
6. भाटिया, रीतिका (2012) ''कार्य तनाव उत्तरदायित्व का अध्ययन'', *इंटरनेशनल जेन्थ इंटरनेशनल जनरल ऑफ मल्टी डिस्पेंसरी रिसर्च,* पृष्ठ संख्या 253
7. मंगल एस. के व अन्य (2014–15) *"अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया",* वेदांत प्रकाशन लखनऊ, द्वितीय–संस्करण, पृ.स. 94–101
8. प्रभु, पी. सुरंश (2011) ''उच्चतर माध्यमिक छात्रों के तनाव का अध्ययन'', लघु प्रबंध, *इंटरनेशनल जनरल ऑफ ह्यूमनिट एण्ड सोशल साइंस इनवेशनए* पृष्ठ संख्या 63–68

Challenges In Human Resource Management: A Critical Study

Kapil Raut
Assistant Professor
Nabira Mahavidlaya, katol

ABSTRACT:

The term "human resource management" (HRM) is used to describe formally designed processes used for the management of people within an organization. Staffing, employee remuneration and benefits, and defining/designing work are the three main areas where a human resource manager is responsible. HRM's main goal is to maximize employee performance and, consequently, an organization's productivity. Despite the business world's rapid pace of development, it is doubtful that this obligation will change in any significant way. "The basic mission of human resources will always be to acquire, develop, and retain talent; align the workforce with the business; and be an excellent contributor to the business," Edward L. Gubman wrote in the Journal of Business Strategy. These three difficulties won't ever alter. Small businesses in particular, which frequently lack an HR staff to rely on, may find it difficult to manage human resources. They might only have one HR employee, or perhaps the CEO still has ownership of this duty. In any case, small business owners must be aware of the difficulties and how to overcome them in order to be ready to handle HR problems when their business and personnel expand. The purpose of this essay is to examine HRM's difficulties, offer solutions, and draw attention to newly emerging issues.

KEYWORD: Human Resource Management, small businesses, Employees.

INTRODUCTION:

The globe is becoming borderless and the nations are quickly integrating into a genuinely global economy thanks to improved communication tools, ground-breaking technology, and the removal of economic and social obstacles. In this situation, the HR manager's job has taken on a much higher relevance since he is expected to foster an environment in the workplace where people of different backgrounds, cultures, and nationalities can get along and succeed.

In other words, HRM is undergoing a major transformation that will change career paths in uncertain ways. As employees become more business savvy, many administrative functions are being automated and outsourced, requiring many HR professionals to demonstrate new skills and apply for new and sometimes unfamiliar roles.

RESEARCH PROBLEM:

Today, HR duties and responsibilities have become a challenge for HR managers to compete with global competitors and sustain themselves in a diverse economy. Since human resources are necessary and essential for every business regardless of its size and nature, making optimal use of available human resources is a very difficult task for every human resource manager. in this competitive era. For this reason, we have chosen this topic and tried to analyze the emerging challenges in HRM and find a solution to it.

OBJECTIVES:

1. To study the challenges in HRM.
2. To provide recommendations to overcome challenges.

3. To highlight long term challenges in HRM.

RESEARCH METHODOLOGY:

For this consider secondary information has been utilized. The information has been collected through internet, websites etc.

EMERGING HR CHALLENGES:

1. Handling multicultural/Diverse Workforce:

A multicultural workforce is one made up of men and women from a assortment of distinctive social and racial foundations. The labor drives any nation may be a reflection of the populace from which it is drawn, in spite of a few twists which will be caused by separation or social predisposition in enlisting. Managing with individuals from diverse 'age', 'gender', 'race', 'educational background', 'location, income', 'parental status', 'religious beliefs', 'marital status' and 'ancestry' and 'work experience' can be a challenging assignment for HR supervisors. Social contrasts may regularly lead to challenges with communications and a rise within the grinding that can create as individuals with distinctive desires and propensities connected. As a result, workforce differing qualities is expanding. Overseeing these individuals with distinctive devout, social, ethical foundation is challenging assignment for HR Chief. Hence it is imperative for a HR director to make an environment in which the positives of differing qualities are tackled and the negatives are minimized as much as conceivable.

2. Employee Selection:

Representative determination is a vital prepare for any organization, but especially for little commerce that can be challenged to compete with bigger representatives. Little commerce requires competent and competent representatives to assist them create and convey tall quality items and administrations. Not as it were these challenges but there are a few other components which impact the representative determination. Thus, a HR supervisor got to consider all these components whereas selecting the most excellent reasonable worker for his organization. A few of the components which influence the representative determination are as takes after:

- **Internal factors:**

a. Recruitment cost: The costs incurred for the recruitment process can also affect the selection process.

b. Human resource planning: Prior to hiring an employee, there may have been a staffing plan in place, and the HR manager may have to follow this plan on their own, they cannot make decisions outside of the established plan.

c. Job analysis.

- **External factors:**

a. Recommendations: Existing employees may recommend their relatives or friends to fill the vacancies, if the person who recommended may be good or may not be.

b. Political interference: A few candidates may arrive to the meet with the impact of politicians who may be commonplace to the HR supervisor and have great relationship with company in those case we may got to select those candidates.

c. Personal bias.

d. Bribing: A few candidates may offer bribe to create area.

3. Compliance with Laws and Direction:

Keeping up with changing business laws could be a struggle for business proprietors. Numerous select to disregard business laws, accepting they do not apply to their trade. But doing so may cruel reviews, claims, and conceivable indeed the downfall of a company. HR manager will be capable in enlisting representatives it is his obligation to care of laws and directions with respect to work, in this way it'll be exceptionally challenging to him to choose a worker with taking into thought of all laws and directions. He must get upgraded himself around the changing rules and controls with respect to business.

4. Training and development:

Preparing is approximately knowing where you're within the display and after sometimes where you'll reach together with your capacities. By training, people can learn unused data, modern technique and revive their existing information and abilities due to this there's much advancements and includes up the viability at work. The thought process behind giving the preparing is to form an affect that keeps going past the conclusion time of the preparing itself and workers get overhauled with the unused marvel. Preparing can be advertised as expertise advancement for people and bunches. Organizational Improvement could be a process that "strives to construct the capacity to attain and maintain a modern crave state that benefits the organization or community and the world around them."

The HR department faces many challenges in training and developing its workforce, whether it is ensuring the retention of high-achieving people driving the business or achieving the success of its employees. untapped potential employees and underperforming employees.

Investing in training and developing lower-level employees is one common HR issues. Some companies struggle to find the resources to do this. Frontline workers are the hardest workers and may not have time to train.

5. Globalization in HRM:

The word "globalization" is deeply ingrained in the minds of every successful businessman, and the concept of "global village" is pervasive in the modern business world. Globalization is the process of uniting people from all over the world into a single community connected by a vast network of communication technologies. This aspect of globalization is also affecting the business world today. HR managers no longer have to rely on small, confined markets to find the right talent needed to meet global challenges, but can now recruit employees from all over the world.

How "Globalization" affects to HRM challenges....

- Large-scale investments and modernization require highly qualified and technically trained employees to replace low-educated, unskilled and laid-off workers.
- As a result of globalization, companies are forced to cross borders and rapidly expand into global markets.
- As globalization progresses, more and more foreign companies are entering the Indian market. The challenges for domestic companies will be even greater in the years to come.
- Indian firms worried about how to face competition from multinationals.

6. Work life Balance:

Balancing work and personal life is becoming more and more important when hiring men and women. Working women now make up 15% of India's 150 million urban women population. Organizations seeking a reputation as a "good place to work" should pay special attention to minimizing and facilitating resolution of work and personal conflicts among employees. But the challenge is knowing and doing things to promote and support work-life balance without interfering with employees' personal lives. HR departments in such organizations are often looking for creative solutions that are practical yet effective. Organizations that are successful in this area take work-life balance to even higher levels, not only managing domestic pressures on their employees, but also promoting their self-fulfillment.

- **Retaining employee:**
  Globalization has given flexibility to working experts to work anyplace within the world.
- Now that they have a wealth of exciting job opportunities, recruiting and retaining the best talent in the industry is no longer a joke.
- Giving amazing work environment and advertising more compensation and advantages than your competitors can hold and spur them.

7. Conflict Managing:

There's no organization without struggle circumstances. It is known that 80% of strife circumstance happen freely of human will. Its causes are people's person characteristics, as well as structure of the organization, conditioned by the culture set up within the organization. Work-Life-conflict could be a clear and display peril to organizations and dissent of this reality would be at the danger of tolerating imperfect worker execution. HR supervisors ought to know how to handle employee-employer and employee-employee clashes without harming their sentiments.

In spite of the fact that it is nearly inconceivable to maintain a strategic distance from clashes among individuals still giving them thoughtfully can offer assistance HR supervisors to resolve the issues. They ought to be able to tune in to each party, choose and communicate to them in a persuading way in arrange to maintain a strategic distance from future clashes.

How to overcome the HR challenges…?

- **Facilitation:** A HR manager must beware of help to be given to the existing workers or for unused workers. He ought to see to that what will be the spark for representative to urge fortified to deliver his best and he must watch out extraordinarily around women representatives and most competent and skilled workers to dodge holding of representatives.
- **HR planning:** To overcome the above challenges, before initiating the recruitment or selection process, HR managers should have an adequate understanding of how many vacancies, what types of positions are available, where and from what they need to be recruited. You have to plan. What qualifications a candidate has, how the interview must be conducted, and what hurdles must be overcome can be factors that influence candidate selection.
- **Ethical Behavior:** HR managers must act ethically to maintain friendly relationships with employees, avoid conflicts, and sensitively address employee diversity.

- **Coordination:** An HR manger must work in diverse work force and he must stimulate his subordinates to do action. Thus, he must develop coordinating attitude in him as well as in the working environment.
- **Sympathy and Consideration:** Humans are social creatures and need attention and consideration from others, both at work and elsewhere. Therefore, because HR managers work with people, they must understand and deal with other people's problems.
- **Knowledge of Labor:** HR managers should have extensive knowledge of the world of work. In other words, you have to know how your employees think. Managers must not only have years of experience working with a diverse workforce, but must also be aware of the changing trends in the world of work Changes in employment rules and regulations. He has to know about minimum and maximum wages and average working hours.
- **Communication:** Communication between HR managers or department heads and employees should be appropriate, clear and easy to understand. Entrepreneurs should focus on communicating the benefits of change to everyone so that employees can easily and quickly adapt to change.
- Employers should provide employees with opportunities to use their skills and strengths every day. Achieving your goals will motivate you and give you the opportunity to further develop your skills.

EMERGING HR CHALLENGES IN FUTURE….

One of the key activities for HR managers is workforce planning. From the perspective of the 21st century HR function, the organizational function has evolved from being “behind the scenes” to being a key business differentiator. In the 21st century, especially since globalization, the role of human resources has taken on a new dimension. Human resource management is a tough job and requires special skills. Following are the some of the challenges being faced by HR Manager which is identified:

a. Career development and growth
b. Promoting organizational culture and a heterogeneous workforce.
c. Conflict management and resolution.
d. Professional ethics and values.
e. Managing Multi-Generational Workforce.
f. Strategies for Motivation and Retention.
g. Flexible work hours.
h. Striking work life balance.
i. Recruitment and selection.

CONCLUSION:

In terms of the above explanation, globalization can have many impacts on companies and with it comes cultural diversity. His HRM today must have the expertise, mindset and skills necessary to gain a competitive advantage on a global scale. Creativity and innovation are known to be the key to success, so HR managers should always keep an eye on it. The ability to meet the challenges of globalization, which has brought a whole new perspective to organizations, hinges heavily on HR. Organizations are getting smarter in their use of technology, so it's important to

ISSN No. 2394-8426
Aug-2021
Issue–II(II), Volume–X

embrace any change. In addition to the impact of globalization, other factors such as technological change, existing workforce competencies and well-developed skills and knowledge of younger generations, employee welfare legislation and increasing competition in the business environment, etc. is also a big issue for us. a HR manager should consider challenges when recruiting and selecting the best employees.

REFERENCES:

1. Nayantara Padhi 'Strategic Human Resource Management Theory and Practice, Atlantic Publishers & Distributors, New Delhi.
2. Noe R.A. 'Employee Training and Development', Mcgraw-Hill.
3. VSP Rao, Human Resource Management, Second Edition, Excel Books, New Delhi
4. Walton J. (1999), Strategic Human Resource Development, Essex: Financial Times/Prentice Hall.
5. Wilson J. (Editor) (1999) Human Resource Development, London: Kogan Page.
6. http://www.griffith.ie/
7. http://www.peopleandmanagement.com/
8. https://www.inc.com/encyclopedia/human-resource-management.html

ISSN No. 2394-8426
Aug-2021
Issue–II(II), Volume–X

उच्च माध्यमिक शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयक जाणीव जागृतीचा अभ्यास

प्रा.डॉ.मोतीलाल सुकदेव उभाळे
संस्थामाता सुशीलादेवी साळुंखे
महिला शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय तासगाव
Email- ubhalemotilal66@gmail.com

सारांश:- प्रस्तुत संशोधनात संशोधकांनी उच्च माध्यमिक शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयक जाणीव जागृतीचा अभ्यास केला आहे. सदरहू संशोधकांनी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीतील सर्वेक्षण पद्धतीचा अवलंब केला आहे. या संशोधनात सहेतुक नमुना निवड पद्धतीने माध्यमिक स्तरावरील शिक्षकांची निवड प्रस्तुत संशोधनासाठी केली आहे. माहिती संकलनासाठी स्वनिर्मित मानवी हक्कांविषयक जाणीव जागृती या शोधिकेचा अवलंब केला आहे. माहितीचे विश्लेषणासाठी टक्केवारी या संशोधन संख्याशास्त्रीय परिमाणाचा अभ्यास अवलंब केला आहे. प्रस्तुत संशोधनाच्या निष्कर्षातून असे लक्षात येते की, उच्च माध्यमिक शिक्षकांना मानवी हक्कांविषयी विषयी जाणीव जागृती आहे.

१) प्रस्तावना- दुसऱ्या महायुद्धाच्या परिमाणांमुळे परिणामामुळे जागतिक विचारवंतांनी शांतता माय जीवन पद्धतीचा पुरस्कार केला. युद्धामुळे होणारी वित्त व मनुष्य आणि टाळण्यासाठी काय उपाय करता येईल यावर विचारवंतांमध्ये विचारप्रवाह सुरू झाले त्यानुसार मानवी हक्कांविषयी चर्चा झाली 10 डिसेंबर 1954 रोजी संयुक्त राष्ट्रसंघांनी मानवाधिकार सदन स्वीकारले 10 डिसेंबर हा दिवस जगभर मानवी हक्क दिन म्हणून साजरा करण्यात येतो मानवी हक्क मानवी जीवनासाठी महत्त्वाचे आहेत संयुक्त राष्ट्र संघाने मानवी प्रतिष्ठेचे एक महत्त्वाचे उद्दिष्ट मानले होते त्याचा परिपाक म्हणून मानवी हक्क आयोगाची स्थापना करून मानवी हक्कांचे रक्षण आणि संवर्धन यासंबंधी एक महत्त्वाची संस्था म्हणून ओळखली जाते. शिक्षकांनी प्रत्येक व्यक्ती साक्षर व सक्षम करता येते यासाठी शिक्षक हा मुख्य दुवा आहे शिक्षक आपल्या वर्तनातून मानवी हक्कांविषयी विद्यार्थ्यांना सतत जागृत जागृत करू शकतो शिक्षकांना सर्व कायदे हक्क नियम याविषयी माहिती असायला हवी प्राथमिक शिक्षणापासून ते विद्यापीठीय शिक्षणापर्यंत प्रत्येक विद्यार्थ्यास शिक्षणातून मानवी हक्कांविषयी जाणीव जागृती करता येईल म्हणूनच प्रस्तुत संशोधन हे उच्च माध्यमिक शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयी जाणीव जागृती कशी आहे या प्रश्नाचे उत्तरासाठी करण्यात आले आहे.

2) समस्या विधान:- उच्च माध्यमिक स्तरावरील शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयक जाणीव जागृतीचा अभ्यास करणे.

3) उद्दिष्ट:- उच्च माध्यमिक स्तरावरील शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयक जाणीव जागृतीचा अभ्यास करणे.

4) संशोधन पद्धती:- प्रस्तुत संशोधनात माध्यमिक स्तरावरील शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयी जाणीव जागृतीची सद्यस्थितीची माहिती जाणून घ्यावयाची असल्याने वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीतील सर्वेक्षण पद्धतीचा अवलंब केला आहे.

5) जनसंख्या व नमुना निवड:- तासगाव शहरातील तीन उच्च माध्यमिक महाविद्यालयातील सर्व शिक्षक हे संशोधनाची जनसंख्या म्हणून निश्चित केले होते. प्रस्तुत जनसंख्या ही 88 आहे. सहेतुक नमुना निवड पद्धतीने 25 माध्यमिक शिक्षकांची निवड प्रस्तुत संशोधनासाठी केली आहे.

6) व्याप्ती:-

१) प्रस्तुत संशोधन हे तासगाव शहराशी संबंधित आहे.

२) प्रस्तुत संशोधन हे उच्च माध्यमिक शिक्षकांशी संबंधित आहे.

३) प्रस्तुत संशोधन हे उच्च माध्यमिक शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयी जाणीव जागृतीशी संबंधित आहे.

7) मर्यादा:-

१) प्रस्तुत संशोधन हे तासगाव शहरापुरतेच मर्यादित आहे.

२) प्रस्तुत संशोधन हे तासगाव शहरातील उच्च माध्यमिक शिक्षकांपुरतेच मर्यादित आहे.

३) प्रस्तुत संशोधन हे उच्च माध्यमिक शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयक जाणीव जागृती पुरतेच मर्यादित आहे.

४) प्रस्तुत संशोधन हे शैक्षणिक वर्ष 2021-22 या वर्षापूरतेच मर्यादित आहे.

8) संशोधन साधने:- प्रस्तुत संशोधनात उच्च माध्यमिक स्तरावरील शिक्षकांच्या मानवी हक्कांविषयी जाणीव जागृतीची सद्यस्थितीची माहिती संकलित करण्यासाठी संशोधकांनी स्वनिर्मित शोधीका तयार केली. त्यात मानवी हक्कांवरील एकूण 12 विधाने तयार करण्यात आली असून सहमत, असहमत व सांगता येत नाही असे पर्याय देण्यात आले होते.

9) संख्याशास्त्रीय परिमाणे:- प्रस्तुत संशोधनात संकलित केलेल्या माहितीचा अन्वयार्थ लावण्यासाठी टक्केवारी या संख्याशास्त्रीय परिमाणांचा अभ्यास केला अवलंब केला आहे.

10) माहिती विश्लेषण व अन्वयार्थ:- संशोधकांनी वरील साधनांद्वारे संकलित केलेल्या माहितीचे विश्लेषण करण्यासाठी टक्केवारी या संख्याशास्त्रीय तंत्राचा वापर केला आहे. माहितीचे विश्लेषण व अर्थनिर्वचन यातून संशोधकास प्राप्त झालेले निष्कर्ष पुढील प्रमाणे दिले आहेत.

11) निष्कर्ष:-

१) जागरूक मानवी हक्क जाहीरनाम्यानुसार सर्व मानव जन्मत:च प्रतिष्ठा व हक्क यासंदर्भात स्वतंत्र व समान आहेत.(सहमत- 80%, असहमत-15%,सांगता येत नाही-5%)

२) मानवी अधिकारांचे वैश्विक घोषणापत्रानुसार ठरलेल्या मानवी हक्कांप्रमाणे जगातील इतर देशांच्या तुलनेत भारतीय नागरिक सर्व मानवाधिकार स्वतंत्रपणे उपभोगत आहेत. (सहमत- 80%,असहमत-7%, सांगता येत नाही-3%)

3) भारतीय संविधानाकडून देण्यात आलेले सर्व मूलभूत हक्क हे भारतीय नागरिकांच्या मानवी हक्कांचे सन्मान करणारे आहे (सहमत-75 %, असहमत- 20 %, सांगता येत नाही-5%)

4) भारतीय राज्यघटनेने प्रदान केलेल्या हक्कांमधील धर्म स्वातंत्र्याच्या धर्मनिरपेक्षता हक्कामुळे देशात एकात्मता टिकून आहे. (सहमत-85%, असहमत-10%, सांगता येत नाही-5%)

5) भारतीय राज्यघटनेतील संपत्तीच्या अधिकाराने कोणत्याही व्यक्तीची मालमत्ता (संपत्ती) संरक्षित करण्यात आलेली आहे. (सहमत-60%, असहमत-30 %, सांगता येत नाही-10%)

6) भारतीय राज्यघटनेतील सरकारद्वारे आर्थिक मदत करणाऱ्या शिक्षणसंस्थेत जात, धर्म, वंश, लिंग, जन्मस्थान यावरून प्रवेश नाकारला जात नाही. या कायद्यामुळे मानवी हक्कांचे संरक्षण झाले आहे. (सहमत-70 %, असहमत- 20 %, सांगता येत नाही-10%)

7) 21 व्या शतकातील भारतीय महिलांना भारतीय राज्यघटनेने देव केलेल्या मूलभूत हक्का नुसार पुरुषांबरोबरचे हक्क व स्वातंत्र्य प्राप्त होत आहेत. (सहमत- 65 %, असहमत- 25% सांगता येत नाही-10%)

8) मुलांच्या संरक्षणासाठी बनलेल्या बालमजूर, लैंगिक प्रतिबंधक कायद्यांची भारतात तंतोतंत अंमलबजावणी होत आहे.(सहमत- 75%, असहमत- 20 %, सांगता येत नाही-5 %)

9) गर्भलिंग निदान प्रतिबंधक कायद्याची प्रभावी अंमलबजावणी होत असल्यामुळे मुलींच्या जन्मदरात वाढ झाली आहे.(सहमत- 75 %, असहमत- 20 %, सांगता येत नाही-5%)

10) right to education act 2009 या कायद्यानुसार भारतातील 14 वर्षाखालील प्रत्येक बालकाला सक्तीचे व मोफत शिक्षण मिळत आहे. (सहमत-40%, असहमत-50 %, सांगता येत नाही-10%)

11) अस्पृश्यता ही अनिष्ट सामाजिक प्रथा मानवाच्या मूलभूत हक्कांना छेद देणारी आहे. (सहमत-78%, असहमत- 15 %, सांगता येत नाही-7%)

12) प्राथमिक ते विद्यापीठीय शैक्षणिक अभ्यासक्रम हे मानवी हक्कांबाबतची जाणीव जागृती करण्यास सक्षम आहेत. (सहमत- 65 %, असहमत- 25%, सांगता येत नाही-10%)

12) शिफारसी:-

१) माध्यमिक स्तरावरील शिक्षकांसाठी मानवी हक्क शिक्षण कार्यशाळांचे आयोजन केले जावे.

२) उच्च माध्यमिक शिक्षकांनी मानवी हक्क शिक्षणासंबंधी स्वतःला अद्यावत ठेवण्यासाठी विविध चर्चासत्रे व परिषदांना उपस्थित राहावे.

३) उच्च माध्यमिक शिक्षकांनी विविध स्तरावर एकत्रीकरणातून विविध उपक्रम, नाट्यीकरण, नवोपक्रम हाती घ्यावेत.

४) माध्यमिक स्तरावरील शिक्षक व विद्यार्थी यांच्या मानवी हक्क शिक्षणासंबंधी शाळांमध्ये व्याख्यानांचे आयोजन करण्यात यावे.

५) माध्यमिक शिक्षकांनी मानवी हक्क व त्यांचे उपयोजन या संबंधित विविध प्रमाणपत्र अभ्यासक्रम पूर्ण करावेत.

संदर्भ ग्रंथसूची:-

१) यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक,(2006) मानवी हक्कातील मूलभूत संकल्पना.
२) भिलेगावकर सदानंद, मोरे चंद्रकांत, (2008),शिक्षक शिक्षण, नित्य नूतन प्रकाशन पुणे
३) शिक्षण संक्रमण, (2009, 2011), पुणे, महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ.
४) सांगोलकर दत्ता, (2014), मानवी हक्क, पुणे: जिज्ञासा प्रकाशन, नाशिक: इनसाईड पब्लिकेशन
५) भिंताडे वि.रा. (1989), शैक्षणिक संशोधन पद्धती, प्रथम आवृत्ती, पुणे: प्रकाशन नूतन प्रकाशन
5) Website:- www.unesco.org